रविवार, दिनाँक 08-09-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

महाबीर जी दे चाह दे विच राहवां, संसार दे विच न फस जावां।।

संसार मुहब्बतां लांवदा ए, दासी दा दिल घबरांवदा ए।

इन्हां विच न मैं मुहब्बत लावां, संसार दे विच न फस जावां।।

ए संसार दे विच फसांवदे नी, आपे आपे ही प्रीतां पए लांवदे नी।

इन्हां कोलों बली निर्लेप राहवां, संसार दे विच न फस जावां।।

संसार समुन्द्र डरांवदा ए, भैणां नूं तरना न आंवदा ए।

रघुनाथ जी दे मन्दिरां विच मैं जावां, संसार दे विच न फस जावां।।

सानू नाम दा जादू पा दे बली, रघुनाथ जी दे घर पहुंचा दे बली।

चित्त रघुनाथ जी दे चरणां दे विच लावां, संसार दे विच न फस जावां।।

महाबीर जी रस्ता बताया ए, रघुनाथ जी दे चरणीं बिठाया ए।

दिन रात मैं सेवा दे विच राहवां, संसार दे विच न फस जावां।।

ए मन किसे पासे न जावे, हरदम सांवले चरणां दे विच राहवे।

रघुनाथ महाबीर जी दा दीदार पावां, संसार दे विच न फस जावां।।

हथ जोड़ के दासी पुकारदी ए, दर्शन देंदे रहणा बलधार जी ए।

कई सूरजां दा सूरज मै देखदी राहवां, संसार दे विच न फस जावां।।

सजनों इस भजन द्वारा सच्चेपातशाह जी की मनोवृत्ति की उत्तमता की समझ आती है क्योंकि इस भजन के अंतर्गत दासी अत्यन्त ही विनम्र स्वर में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी से प्रार्थना करती है कि हे महाबली! मैं सदा सर्वदा आपके चरणों में समर्पित भाव से

बनी रहूँ। सजनों जगत से आज़ाद रहने के प्रति यह पहला कदम है अतः हमें, आपको व सबको यह कदम अविलम्ब उठा लेना चाहिये ताकि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्तियों को प्राप्त कर, उसी अनुसार अपने मन को साधना व अपने सच्चे घर पहुँचना, हमारे लिये सहज हो जाये। इसके अतिरिक्त इस भजन द्वारा स्पष्टया बताया गया है कि यह संसार हर वस्तु को अपने में उलझाकर रखने में दक्ष है। तभी तो यह अपने रंगारंग दृश्यों से भरमाकर व नाना प्रलोभनों में उलझाकर हमें उलझनों में डाल देता है। अतः हमें सावधान होना है। निश्चित रुप से इस हेतु हमें सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित संसार से निर्लिप्त रहने की कला सीखने की आवश्यकता है। वर्ना हम किसी विध् भी बच नहीं सकते क्योंकि यदि एक बार इस संसार सागर के भँवर में फँस गये या धँस गये तो हमारे अन्दर उससे छुटकारा पाकर अपने ख़्याल को अपने घर में स्थित करना असम्भव सी बात हो जायेगी। तब संसार में उलझे रहना हमारे स्वभाव के अन्तर्गत हो जायेगा क्योंकि शनैः शनै इसका रसास्वादन हमारे अन्दर पैदा हो जायेगा। अगर ऐसा हो गया तो समझो कि जीवन भर के लिये हमने अपने जीवन पर घात लगा दी यानि मानव रूपी जीवन के चोले का अन्त परिणाम - चौरासी लाख योनियों की सजा के रूप में हमने स्वीकार लिया। सजनों यही उलझन आपको अपने में बान्धकर रखे हुए है। आपको संसार को सुनना, उसी को प्राप्त करना व सांसारिकता अनुसार जीवन यापन करना इतना अधिक रुचिकर लगने लग गया है कि अपना यथार्थ पूर्णतया विस्मृत कर चुके हो। जानो यही भूल जीवन की सबसे बड़ी भूल होती है। अतः खुद को समझाओ, अपनी अक्ल टिकाणे ले आओ और संसार से निर्लिप्त अवस्था में बने रह जीवन जीने की कला जो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित है, उसको दिल से स्वीकारो और उसी अनुरूप जीवन जीना आरम्भ कर दो। यकीन मानो इस विधि द्वारा आपके जीवन का अन्त परिणाम बदल सकता है और आप मौत के आगोश में जाने के स्थान पर परमधाम पहुँच विश्राम पा सकते हो।

इस सन्दर्भ में अगर आप ऐसा पुरुषार्थ दिखाते हो तो मान लो कि आप वास्तविक रूप से अपने सजन हो अन्यथा स्वयं की मौत का कारण आप खुद ही बन जाओगे। यह आत्मघात यानि महामूर्खता करने की बात होगी। अतः अपने साथ ऐसा मत होने देना। आप ही बताओ कि संसारी भाव-स्वभावो को दृष्टिगत रखते हुए यदि कोई आपको महामूर्ख कहे तो क्या यह आपको अच्छा लगेगा?

नहीं लगेगा।

यद्यपि कहने वाला तो सत्य ही बोल रहा है परन्तु उस सत्य को समझने के स्थान पर आप उससे भिड़ जाओगे। यही कारण है कि वर्तमान काल में सभी का मन-मस्तिष्क परेशान रहता है और गृहस्थाश्रम शान्त व्यवस्था में सध नहीं पाता। जिधर देखो टकराव ही टकराव है, एक-दूसरे के प्रतिकूल बात करने का चलन सा बन गया है। कहाँ ऐसी स्थिति है और कहाँ समभाव? सजनों ऐसी स्थिति से अपने ख़्याल/सुरत को उठाकर समता का प्रतीक बनाना है यानि जो आत्मा में परमात्मा है, उस संग जोड़ना है। जो सजन अब तक इतने वर्षो में यह काम नहीं कर पाएं, उनके लिये सच्चेपातशाह जी कहते हैं - 'ओ जन्म दे वैरीओ। सजनों अपने साथ ऐसा वैर कमाना, अच्छा नहीं लगता। याद रखो जब बुद्धि संसार के साथ कुसंग में उलझ जाती है तो वह भ्रमित हो भ्रष्ट हो जाती है और कोई भी हमें उलझाकर भेड़ों की भान्ति अपने पीछे चलाना आरम्भ कर देता है या फिर आगे चलते हुए डण्डा दिखाकर संसार की दिशा में बढ़ाना आरम्भ कर देता है। इसका अन्त परिणाम अत्यन्त दुःखद होता है। अतः होश में आने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में आप में से कई तो वृद्धावस्था में यानि अपने जीवन की समाप्ति की ओर अग्रसर हैं और अभी भी होश में नहीं आ रहे। सजनों अगर ऐसे ही करते रहेतो यह अपने जीवन की बर्बादी के कसूरवार खुद बनने की बात होगी। अपने साथ ऐसा अन्याय मत करना और यदि कहीं रास्ता समझ नहीं आता तो निःसन्देह पूछ लेना कि मेरे यथार्थ वास्तविक घर का रास्ता किधर और कहाँ से जाता है। आपके पास यह सुविधा तो है पर यदि उस सुविधा का इस्तेमाल ही न करो तो क्या हो सकता है? अतः सावधान हो जाओ और आगे कीर्तन सुनोः-

(महाबीर जी के मुख के शब्द)

देखो श्री राम जी ओ प्रजा विच वसदा।

जित्थे श्री राम दिस्से ओ खिड़ खिड़ हसदा।

ओ जित्थे श्री राम दिस्से ओ खिड़ खिड़ हसदा।।

जम रहे कई मर रहे कई मरने नूं खड़े तैयार।

राम नाम बलधार भजो राम नाम बलधार।।

श्री राम जी रमणे वाले हो, रम रहे हो भरपूर।

राम नाम नूं याद करने वाला है कोई ज़रूर।

हां हां है कोई ज़रूर, वाह वाह है कोई ज़रूर।।

कोना कोना डाली डाली, श्री राम है भरपूर।।

अनुरागी ते सतवादी दी बन्दगी है ओथे मन्जूर।

हां हां है ओथे मन्जूर, वाह वाह है ओथे मन्जूर।।

राम जपो राम जपो राम जपने दा वेला।

राम जपो जीवन बना लौ, जीवन बनावने दा वेला।

हां हां जीवन बनावने दा वेला, वाह वाह जीवन बनावने दा वेला।।

श्री राम जी दी रोशनी, रोशनी है ओ कमाल।

रोशनी ओ सब कोई वर्ते, कोई विरला परखे ओ यार।

हां हां कोई विरला परखे ओ यार, वाह वाह कोई विरला परखे ओ यार।।

सजनों यहाँ 'ख़्याल ध्यान वल और ध्यान प्रकाश वल' जोड़ने का महत्त्व समझ आता है। ऐसा सुनिश्चित किये बिना, जिस ब्रह्मसत्ता के प्रकाश से हमारा जीवन चलता है व शरीर हरकत में बना रहता है उस प्रकाश को हम हक़ीकत में कभी नहीं समझ सकते। हमारे माता-पिता भी ऐसा सुनिश्चित करने हेतु हमें कभी नहीं समझाते। जैसे कोई वस्तु हम ग्रहण करते हैं यानि खाते-पीते हैं, पर यदि उसको जानने का प्रयास ही न करें कि यह वस्तु विशेष हमारे अन्दर किस प्रकार का लाभ अथवा हानि प्रदान करने वाली है तो यह लापरवाही हमारे लिये अत्यन्त ही हानिकारक साबित होती है। ठीक इसी प्रकार हम आत्मप्रकाश का प्रयोग तो करते हैं क्योंकि जीवन उसी से चलायमान है परन्तु कभी भी अपना ख़्याल/ध्यान उस प्रकाश में स्थित कर उस शक्ति को जो कि हमारे जीवन की संचालक है व हमें अमरता का प्रतीक बना सकती है, उस शक्ति की परख नहीं कर सकते। यह विडम्बना की बात है इतना समझाने के बावजूद भी हम ऐसा प्रयास नहीं करते जिस द्वारा वह शक्ति हमारी पकड़ से कभी भी न छूटे। सजनों हम कहते हैं कि यह सार्थक यत्न

करो ताकि हम जीवन में जिस किसी कारण को भी सिद्ध करने के निमित्त भेजे गये हैं, हम उसे परमेश्वर की आज्ञानुसार समयबद्ध करके उसके सुपुत्र कहलायें तथा पुनः अपने वास्तविक यथार्थ में समाकर समरूप हो जायें यानि 'प्रकाश नाल प्रकाश' हो जायें। यह कोई कठिन कार्य नहीं है पर हमने इसे कठिन बना रखा है क्योंकि न तो गर्भावस्था में और न ही जन्मोंपरान्त इसके प्रति माता-पिता ने हमें जाग्रत किया और न ही समाज ने या ज्ञानियों ने जाग्रत किया। तो हम अबोध अपनी यथार्थ शक्ति को विस्मृत कर शक्तिहीन इन्सानों की भान्ति जगत में विचरते हुए जगत में ही उलझकर रह गये और इतने अधिक उलझ गये कि चिरकाल तक सत्संग सुनने के उपरान्त भी हमारे भीतर वांछित जागृति नहीं हो रही। सजनों यह ही जड़ अवस्था कहलाती है यानि बुद्धि जड़ता को प्राप्त हो जाती है। तभी तो अब आपको जितना भी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की वाणी के विषय में समझाते रहो, आपके पल्ले ही नहीं पड़ता। जब पल्ले ही नहीं पड़ता तो क्रियान्वत कैसे करोगे? तभी तो आपके चेहरों से न तो प्रसन्नता झलकती है और न ही अन्तर्घट में प्रसन्नचित्तता का वातावरण पनपता है। अन्दर भी रोना-झुखना और बाहर भी रोना-झुखना लगा रहता है। यही अज्ञानमय अवस्था ही हमारे जन्म की बाज़ी के हारने का विशेष कारण है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जो भी जगत से प्राप्त किया है वह सब भूल जाओ। जिसने भी आचार, विचार, व्यवहार व आहार के बारे में आपको ज्ञान दिया है वह सब का सब भूल जाओ और मान लो कि भूलने में ही प्रसन्नता है। वह सब भूलकर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी जो हमें यथार्थ अवस्था में आने के लिये जना रहे हैं, उनको नत-मस्तक होकर धारण करो और हर तरह से अमल में लाना आरम्भ कर दो। याद रखो तभी आप आध्यात्मिक क्रान्ति में सफल हो सकते हो। आपके अन्तर्घट में ऐसा युग-परिवर्तन हो सकता है, जिस द्वारा कलुकाल छँट जायेगा और सतयुग छा जायेगा। घबराओ मत, यह निश्चित रूप से होगा ही होगा, बस इस हेतु पुरुषार्थ दिखाओ। सजनों अगर आप चाहो तो यह कार्य एक माह में, चाहो तो एक वर्ष में भी कर सकते हो पर अगर अनिच्छा से करो तो कई सालों में भी नहीं हो सकता। अतैव सद्परिणाम को प्राप्त करने के लिये अपने आपको गहनता से समझाओ और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के शान्तिदूत बनकर इस जगत में सत्य को प्रकाशित कर दो व रोती हुई भारतमाता को हर्षा दो। सजनों यह सुकर्म है और मानव के लिये सुकर्म करना धर्म-संगत बात है। हम कहते हैं कि मस्तक की ताकी खोल दो जिसे आपने बन्द कर रखा है और जिससे टकरा कर बात वापिस लौट

जाती है। अतः अन्तर पट खोल दो ताकि बात धारण हो सके। हैरानी की बात तो यह है कि कलियुग का इन्सान दुःखद दुर्दशा को प्राप्त हो चुका है और यह हालत अज्ञानियों ने, माता-पिता ने, परिवारजनों ने, समाज या शासक जो भी रहे उन्होंने की है और इसके परिणामस्वरूप हम गुलामी का जीवन जीते हुए चले जा रहे हैं, चले जा रहे हैं तथा यही चलन हमारी आदत बन गया है। तभी तो हम सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की वाणी को धारणकर आचार-व्यवहार में उतारने के लिये अपने आपको लाचार पा रहे हैं। अब कहाँ तो हमें एक श्रेष्ठ मानव बनकर परमात्मा का सुपुत्र कहलवाना

था और कहाँ हमारी बुद्धि मनुराज में धँसी पड़ी है। हार खाकर ऐसे बैठे हैं कि हमसे कुछ नहीं होगा। बस यही अन्दर का फुरना हमें मार रहा है। हम तो यही कहेंग कि सजनों समझाओ खुद को कि सब कुछ सम्भव है अगर सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की चरण-शरण स्वीकार लो। बस और कुछ नही करना। अब ध्यानपूर्वक कीर्तन सुनोः

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

इन्सान वनजणे आया था धर्म सचयाई।

ख़रीद लियो ने झगड़ा, ख़रीद लियो ने झगड़ा।

झूठ चतुराइयाँ चोरियाँ कर कर, पा लियो ने रगड़ा।।

पंज तत् जलवायु, अग्नि पृथ्वी आकाश नहीं मरना।

जेहड़ा पृथ्वी ते कल्लर है उगया, उस नूं साफ़ है करना।।

एक दा अनेक दिस्सां सब मेरी तो बनत बनाई।

फिर कौन बिनस रिहा, कौन उपज हर जगह मेरी रौशनाई।।

जहां तक घा हरा हो रहंदा, सुक जावे तां वढना पैंदा।

सुक जावे तां वढना पैंदा, तां फिर ओ हरा हो आंदा।

इसे तरह इन्सान मरे जम्मे चौरासी भुगतदा रैंहदा।।

पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण सब मेरी तो बनत बनाई।

इन्हां कोलों निर्लेप मैं राहवां, बिन सूरजों मेरी रौशनाई।।

मैं हूं अपर अपार सजनों, मैं नहीं मजलस विच।

मजलस तों मैं बाहर राहवां ओ मैं नहीं मजलस विच।

मैं ही सिरजनहार हुआ फिर मैं नहीं मजलस विच।।

यह कीर्तन सुनकर हम तो हैरान हो गये। यह सब कुछ सुनने के पश्चात अगर हम कुमतिवान इन्सान सुमति में नहीं आते तो हम से बड़ा स्वयं का शत्रु इस जगत में कोई नहीं है। सजनों धर्म-सच्चाई से गिरना अपने लिये दुःख खरीदने की बात है। अब जितना भी जीवन आपका व्यतीत हुआ है, उस जीवन के क्षणों को दृष्टिगत रखते हुए खुद को परखों कि उस जीवन काल में आपने सच्चाई-धर्म पर शास्त्र-विहित वचनों अनुसार दृढ़ता से बने रहना कितना सुनिश्चित किया? किया भी या हार गये? कौन जीता? जो जीता वो खड़ा हो सकता है।

'कोई भी खड़ा नहीं हुआ'।

यानि कि आप सब हार गये। यहाँ द्वारे पर तो हारे हुओं को भी इज्ज़त दी जाती है पर उस इज्ज़त को समझो तो सही। इसके बावजूद भी आप अपनी इज्ज़त नहीं करते तो अच्छा नहीं लगता। सजनों खुद की इज्ज़त तो करनी बनती है। खुद की इज्ज़त करना चाहते हो तो - जीवन का हर क्षण सत्य-धर्म के अनुसार जीने में सक्षम हो जाओ। जानो आज संसार में कोई विरला ही ऐसा पुरुषार्थ दिखा सकता है क्योंकि आज सब पाखण्ड व आडम्बरयुक्त हो दर-दर भटक रहे हैं और अन्यों को भटका भी रहे हैं। सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के बावजूद अपनी किस्मत को धिक्कारना यानि उनके वचनों की पालना न करना यह बहुत बड़ी नादानी है जो कि बर्दाश्त से बाहर है। कुदरत इतनी नादानी कैसे बर्दाश्त कर सकती है? सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ तो कुदरती साईन्स पढ़ा रहा है और कुदरती साईन्स के तरीकों से आपको समझा भी रहा है। सजनों यह सबसे उत्तम मानसिकता वाला बनने की श्रेयस्कर बात है। फिर भी यदि हम कभी मन-चित्त

लगाकर आगे नहीं बढ़ते तो हम कसूरवार हैं। उस कसूर की सजा से बचना नामुमकिन होता है क्योंकि उस कसूर से इन्सान तीनों तापों से ग्रस्त हो जाता है, तड़फता है, परवश हो जाता है और हर क्षण चीत्कार करता रहता है। फिर भी वह मूर्ख इन्सान अपनी इस दुर्दशा का दोषारोपण परमात्मा पर ही करता है कि मेरे साथ यह क्या किया? जो सीधा रास्ता प्रदर्शित किया जा रहा है उस पर न चलकर अपने आप को बेकसूर मानता है। ऐसे इन्सानों की तुलना कीर्तन में 'घास' के साथ की गई है क्योंकि जब घास सूख जाता है और किसी काम का नहीं रहता तो उसे काटना ही पड़ता है। जैसा कर्म कमाया उसी अनुसार ही इन्सान दुर्दशा को प्राप्त होता है पर फिर भी उसे समझ नहीं आती।

इसी सन्दर्भ में सजनों ध्यान-कक्ष से बारम्बार बताया जाता है कि सत्य-धर्म के सद्मार्ग पर अग्रसर होने के लिये आत्मज्ञान प्राप्ति करे अपने जीवन में प्राथमिकता दो। अतः सब ध्यान-कक्ष के साथ जुड़ो। आपकी एक क्लास भी न छूटे। इसके साथ-साथ अपने परिवारों को भी जोड़ो ताकि आपके जीवन का रास्ता सहज बन जाये। विडम्बना की बात तो यह है कि यह भी आपसे नहीं हो रहा क्योंकि आपने अपना पारिवारिक खेल भी स्वयं ही बिगाड़ा हुआ है। कोई आपके संग चलने को तैयार ही नहीं है क्योंकि आपने उनको शास्त्र के नियम नीतियों अनुसार परवरिश ही नहीं दी। आपकी 'मैं' फिर भी सिर चढ़कर बोलती है, आपने यह कैसा पाप कमाया। सो हम आप सबसे अनुरोध करते हैं कि खुद पर और अपने परिवारजनों पर तरस खाओ। जो अब तक नहीं कर पाये उसे अब कर लो। इसके लिये आप स्वार्थपरता के रास्ते से उनको हटाकर आध्यात्मिक मार्ग पर प्रवृत कर दो। इस तरह अपनी भूल सुधार लो। ऐसा करने से निःसन्देह आपको माफी मिल जायेगी। क्षमा का मतलब है शान्ति प्राप्त हो जायेगी। याद रखो जहाँ शान्ति होती है, वहाँ सत्य प्रगट होता है और जहाँ सत्य प्रगट होता है वहाँ धर्म मुट्ठी में होता है। तब इन्सान निष्काम कर्म करता है यानि जो भी करता है, धर्म अनुकूल ही करता है। सजनों जानो कि केवल निष्काम कर्म ही धर्मानुकूल होता है। अतः अपनी भूल सुधारने का यह सुनहरी मौका है, इसे हाथ से मत जाने देना। पूरी लगन से आगे बढ़ते जाओ। ध्यान-कक्ष की क्लास भूलकर भी मिस मत करना। अगर धर्म के मार्ग पर निरन्तर प्रशस्त रहना चाहते हो तो यह भूल कदापि मत करना क्योंकि आधा-अधूरा प्राप्त किया हुआ ज्ञान किसी काम का नहीं होता। सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिये ऐसा सुनिश्चित करना अत्यन्त आवश्यक है। याद रखो यदि परिवार सहित आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करते हो तो उसका यथा वर्त-वर्ताव करने में आपको कोई

दिक्कत नहीं होगी, तो समझो कि रास्ता खुल ही जाएग। अतः हिम्मत दिखाओ और विजयी हो जाओ।

आप ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।